गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण ११

'श्रीभगवद्गीता' में भगवान कृष्ण कहते हैं :

> *ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।*
>
> हे अर्जुन, परमात्मा सभी के हृदय में निवास करता है। [१८:६१]

हृदय सत्य का निवास-स्थान है। जब तुम ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हें उस अन्तर-स्थान में प्रवेश करना होता है। चाहे तुम मन्त्र का जाप कर रहे हो और उसमें निहित सत्य की अनुभूति करना चाहते हो, चाहे तुम कोई पुस्तक पढ़ रहे हो, किसी शास्त्र का अध्ययन कर रहे हो या कोई प्रवचन सुन रहे हो, केवल बुद्धि से तुम आध्यात्मिक ज्ञान को ग्रहण नहीं कर सकते। जिस रूप में तुम बुद्धि को जानते-समझते हो, उस बुद्धि का शुद्धिकरण होना ही चाहिए। तब गहन हृदयाकाश के अन्तरतम स्थान से ज्ञान का उदय होता है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ४ "ज्ञान में दृढ़ता," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ५३-५४।